

पद १०३

(राग: काफी जिल्हा - ताल: केहरवा)

एक चिदाकाश आत्मा आहे। प्रतिदेही मी मी म्हणताहे। मीपणीं
भाग त्याग विवरा। याच देहीं जीव ब्रह्म करा। जीव कूटस्थ ईश
ब्रह्मरूपा। नाहीं नाहीं नाहीं भेद बापा। वृत्ति मावळे दुजिया वृत्ति
नाहीं। तंव तुझे साम्राज्य सुख स्पष्ट घेई। ज्ञानमार्ताण्ड जगिं
प्रगटला। आत्मबोध सुखाचा सुकाळ झाला। संतबोध सुखाचा
सुकाळ झाला। ज्ञान बोध सुखाचा सुकाळ झाला ॥१॥